मधुबन ओम् शान्ति अंक 394 मई 2025

पत्र-पुष्प

"एकव्रता बन प्युरिटी की रॉयल्टी और पर्सनैलिटी को धारण करो"

(बापदादा और दीदियों की तरफ से सर्व ब्राह्मण परिवार प्रति याद-पत्र)

परम-पवित्र, परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा प्युरिटी की रॉयल्टी और पर्सनैलिटी को धारण करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - हम सबकी परम आदरणीय, यज्ञ की आधार स्तम्भ, साकार रूप में ब्राह्मण परिवार की छत्रछाया समान रूहानी स्नेह और शक्तियों से पालना करने वाली आदरणीय दादी रतनमोहिनी जी, अपने 101 वर्ष के जीवनकाल की सफल यात्रा के साथ दादी युग का समापन कर 8 अप्रैल 2025 को अव्यक्त-वतन वासी बन गई। अभी हम सबकी आदरणीय मोहिनी दीदी मुख्य प्रशासिका के रूप में और मुन्नी दीदी सहमुख्य प्रशासिका के रूप में यज्ञ का कार्यभार सम्भालेंगी। जैसे 1969 में साकार बाबा अव्यक्त हुए, दादियों ने यज्ञ की बागड़ोर सम्भाली और पूरे विश्व में सेवाओं की धूम मचाई। ऐसे अब दादियों के बाद दीदियों के हाथ में बापदादा ने परमात्म प्रत्यक्षता की जवाबदारी सौंपी हैं, इस महा-परिवर्तन में भी कई गहरे रहस्य भरे हुए हैं, जो समय प्रमाण हम सबके सामने आते जायेंगे।

अभी तो बाबा कहते तुम बच्चों को विश्व नव निर्माण के कार्य में राइट हैण्ड बन अपनी चलन और चेहरे से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनना है। क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन देने के बजाए अपना कनेक्शन ठीक रख परमात्म शक्तियां लेनी है और पूरे विश्व को देनी है। विशेष मन्सा द्वारा सकाश देने की सेवा करनी है। व्हाई-व्हाई के बजाए वाह! वाह! करते सदा परमात्म प्यार में लवलीन रहना है। बोलो, ऐसा ही अनुभव कर रहे हो ना! इस मई मास के लिए प्यारे बापदादा के विशेष अव्यक्त इशारे हैं बच्चे, आप संगमयुगी ब्राह्मणों के जीवन का जीयदान पवित्रता है। ब्रह्माकुमार/कुमारी माना ही प्युरिटी की रॉयल्टी और पर्सनैलिटी को धारण करने वाले। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप कम्बाइण्ड है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। हम सब ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन पवित्र संकल्प हैं, आंखों की रोशनी पवित्र दृष्टि है, यही ब्राह्मण जीवन की पहली मर्यादा है इसलिए पवित्रता की महानता को जीवन में लाने के लिए मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ यह तो आपके जीवन का वरदान है।

तो बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें अपने ब्राह्मण जीवन की इस रूहानी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी को सहज स्वभाव से धारण किया है ना! इस पहली मुख्य मर्यादा का मन-वचन-कर्म से पालन करते हुए योग की गहरी अनुभूतियां करनी है। वर्तमान समय जबकि विश्व में चारों ओर दु:ख अशान्ति बढ़ती जा रही है, सभी अपने इष्ट देव, देवियों को पुकार रहे हैं, बाबा कहते बच्चे उनकी पुकार सुनो और मन्सा सकाश द्वारा उन्हें शक्ति और सहारे का अनुभव कराओ, इसके लिए मन-बुद्धि बहुत स्वच्छ और शक्तिशाली चाहिए। कहाँ भी देह, सम्बन्ध वा पदार्थों में बुद्धि फंसी हुई न हो, जितना पवित्रता की सम्पूर्ण धारणा होती जायेगी उतना इस बेहद सेवा के निमित्त बन सकेंगे। तो ऐसा ही अटेन्शन रख अभी सबको रोज़ कम से कम आधा घण्टा भी मन्सा सकाश देने की सेवा अवश्य करनी है।

बाकी आप सब खुशमौज में होंगे। इस समय मधुबन में तो सेवाओं की बहार है। एक तरफ राजयोग शिविर चल रहे हैं, दूसरी तरफ सभी स्थानों पर योग भट्ठियां तथा ज्ञान सरोवर में विंग्स के कार्यक्रम चल रहे हैं। सभी स्थान सदा ही बेहद सेवा में व्यस्त रहते हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद.... ओम् शान्ति।

ये अव्यक्त इशारे

रुहानी रॉयल्टी और प्युरिटी की पर्सनैलिटी धारण करो

1) संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की विशेषता पवित्रता है। प्रवृत्ति में रहते अपवित्रता से निवृत्त रहना, स्वप्न मात्र भी अपवित्रता के संकल्प से मुक्त रहना - यही विश्व को चैलेन्ज करने का साधन है, यही आप ब्राह्मणों की रूहानी रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है।

2) प्युरिटी की रॉयल्टी अर्थात् एकव्रता बनना, (एक बाबा दूसरा न कोई) इस ब्राह्मण जीवन में सम्पूर्ण पावन बनने के लिए एकव्रता का पाठ पक्का कर लो। वृत्ति में शुभ भावना, शुभ कामना हो, दृष्टि द्वारा हर एक को आत्मिक रूप में वा फरिश्ता रूप में देखो। कर्म द्वारा हर आत्मा को सुख दो और सुख लो। कोई दु:ख दे, गाली दे, इनसल्ट करे तो आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ।

3) पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, वह तो फाउण्डेशन है लेकिन साथ में और चार भी हैं। क्रोध और सभी साथी जो हैं, उन महाभूतों का त्याग, साथ-साथ उनके भी जो बाल बच्चे छोटे-छोटे अंश मात्र, वंश मात्र हैं, उनका भी त्याग करो तब कहेंगे प्योरिटी की रूहानी रॉयल्टी धारण की है।

4) पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, सम्पूर्ण पवित्रता आपके जीवन की सबसे बड़े से बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी और पर्सनैलिटी है, इसे धारण कर एवररेडी बनो तो प्रकृति अपना काम शुरू करे। प्युरिटी की पर्सनैलिटी से सम्पन्न रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है।

5) ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है - सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को अपनी तरफ आकर्षित करेगी, और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी में रॉयल्टी देने से छुड़ायेगी। इसी रॉयल्टी के अनुसार भविष्य रॉयल फैमिली में आ सकेंगे। जैसे शरीर की पर्सनैलिटी देह-भान में लाती है, ऐसे प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही-अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है।

6) जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं, ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार पवित्रता है। आत्मा और परमात्मा के मिलन का आधार पवित्र बुद्धि है। संगमयुगी प्राप्तियों का आधार और भविष्य में पूज्य-पद पाने का आधार पवित्रता है इसलिए पवित्रता की पर्सनैलिटी को वरदान रूप में धारण करो।

7) यदि वरदाता और वरदानी दोनों का सम्बन्ध समीप और स्नेह के आधार से निरन्तर हो और सदा कम्बाइन्ड रूप में रहो तो पवित्रता की छत्रछाया स्वत: रहेगी। जहाँ सर्वशक्तिवान बाप है वहाँ अपवित्रता स्वप्न में भी नहीं आ सकती है। जब अकेले होते हो तो पवित्रता का सुहाग चला जाता है।

8) ब्राह्मणों की लाइफ, जीवन का जीय-दान पवित्रता है। आदि-अनादि स्वरूप ही पवित्रता है। जब स्मृति आ गई कि मैं अनादि-आदि पवित्र आत्मा हूँ। स्मृति आना अर्थात् पवित्रता की समर्थी आना। स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप आत्मायें निज़ी पवित्र संस्कार वाली हैं। तो निज़ी संस्कारों को इमर्ज कर इस पवित्रता की पर्सनैलिटी को धारण करो।

9) पवित्रता ब्राह्मण जीवन के विशेष जन्म की विशेषता है। पवित्र संकल्प ब्राह्मणों की बुद्धि का भोजन है। पवित्र दृष्टि ब्राह्मणों के आंखों की रोशनी है, पवित्र कर्म ब्राह्मण जीवन का विशेष धन्धा है। पवित्र सम्बन्ध और सम्पर्क ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है। ऐसी महान चीज़ को अपनाने में मेहनत नहीं करो, हठ से नहीं अपनाओ। यह पवित्रता तो आपके जीवन का वरदान है।

10) आपका स्व-स्वरूप पवित्र है, स्वधर्म अर्थात् आत्मा की पहली धारणा पवित्रता है। स्वदेश पवित्र देश है। स्वराज्य पवित्र राज्य है। स्व का यादगार परम पवित्र पूज्य है। कर्मेन्द्रियों का अनादि स्वभाव सुकर्म है, बस यही सदा स्मृति में रखो तो मेहनत और हठ से छूट जायेंगे। पवित्रता वरदान रूप में धारण कर लेंगे।

11) पवित्रता की शक्ति परमपूज्य बनाती है। पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन करते हो। पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है। आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है। पवित्रता के आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है। इसके महत्व को जानकर पवित्रता के लाइट का क्राउन धारण कर लो।

12) वर्तमान समय के प्रमाण फरिश्ते-पन की सम्पन्न स्टेज के वा बाप समान स्टेज के समीप आ रहे हो, उसी प्रमाण पवित्रता की परिभाषा भी अति सूक्ष्म होती जाती है। सिर्फ ब्रह्मचारी बनना ही पवित्रता नहीं लेकिन ब्रह्मचारी के साथ ब्रह्मा बाप के हर कर्म रुपी कदम पर कदम रखने वाले ब्रह्माचारी बनो।

13) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। जहाँ पवित्रता है वहाँ दु:ख अशान्ति आ नहीं सकती। तो चेक करो सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शान्त स्वरुप में विराजमान रहते हैं? अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है या इस उलझन से परे सुख स्वरूप स्थिति रहती है?

14) रूहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन सम्पूर्ण पवित्रता है। तो अपने से पूछो कि रूहानी रॉयल्टी की झलक और फलक आपके रूप वा चरित्र से हर एक को अनुभव होती है? नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे पर, चलन में वह रूहानी रॉयल्टी दिखाई देती है या साधारण चलन और चेहरा दिखाई देता है?

15) जैसे दुनिया की रॉयल आत्मायें कभी छोटी-छोटी बातों में, छोटी चीज़ों में अपनी बुद्धि वा समय नहीं देती, देखते भी नहीं देखती, सुनते भी नहीं सुनती, ऐसे आप रूहानी रॉयल आत्मायें किसी भी आत्मा की छोटी-छोटी बातों में, जो रॉयल नहीं हैं उनमें अपनी बुद्धि वा समय नहीं दे सकते। रूहानी रॉयल आत्माओं के मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल भी नहीं निकल सकते।

16) वारिस क्वालिटी प्रत्यक्ष तब होगी जब आप अपनी प्युरिटी की रॉयल्टी में रहेंगे। कहाँ भी हद की आकर्षण में आंख न डूबे। वारिस अर्थात् अधिकारी। तो जो यहाँ सदा अधिकारी स्टेज पर रहते हैं, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहाँ भी अधिकारी बनते हैं।

17) जो चैलेन्ज करते हो - सेकण्ड में मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त करो, उसको प्रैक्टिकल में लाने के लिए स्व-परिवर्तन की गति सेकण्ड तक पंहुची है? स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रॉयल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हो।

18) प्युरिटी की पर्सनौलिटी के आधार पर ब्रह्मा बाप आदि देव वा पहला प्रिन्स बनें। ऐसे आप भी फालो फादर कर वन नम्बर की पर्सनैलिटी की लिस्ट में आ जाओ क्योंकि ब्राह्मण जन्म के संस्कार ही पवित्र हैं। आपकी श्रेष्ठता वा महानता ही पवित्रता है।

19) प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की पर्सनैलिटी को धारण कर, इस ऊंची पर्सनैलिटी के रूहानी नशे में रहो। अपनी रूहानी पर्सनैलिटी को स्मृति में रख सदा प्रसन्नचित रहो तो सब प्रश्न समाप्त हो जायेंगे। अशान्त और परेशान आत्मायें आपकी प्रसन्नता की नज़र से प्रसन्न हो जायेंगी।

20) आप ब्राह्मणों जैसी रूहानी पर्सनैलिटी सारे कल्प में और किसी की भी नहीं है क्योंकि आप सबकी पर्सनैलिटी बनाने वाला ऊंचे ते ऊंचा स्वयं परम आत्मा है। आपकी सबसे बड़े ते बड़ी पर्सनैलिटी है - **स्वप्न वा संकल्प में भी सम्पूर्ण प्युरिटी**। इस प्युरिटी के साथ-साथ चेहरे और चलन में रूहानियत की भी पर्सनैलिटी है - अपनी इस पर्सनैलिटी में सदा स्थित रहो तो सेवा स्वत: होगी।

21) प्रत्यक्षता का सूर्य उदय तब होगा जब पवित्रता की शमा चारों ओर जलायेंगे। जैसे वो शमा ले करके चक्कर लगाते हैं, ऐसे पवित्रता की शमा चारों ओर जगमगा दो तब सब बाप को देख सकेंगे, पहचान सकेंगे। जितनी अचल पवित्रता की शमा होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी।

22) श्रेष्ठ कर्मों का फाउन्डेशन है ''पवित्रता''। लेकिन पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं। यह भी श्रेष्ठ है लेकिन मन्सा संकल्प में भी अगर कोई आत्मा के प्रति विशेष लगाव वा झुकाव हो गया, किसी आत्मा की विशेषता पर प्रभावित हो गये या उसके प्रति निगेटिव संकल्प चले, ऐसे बोल वा शब्द निकले जो मर्यादापूर्वक नहीं हैं तो उसको भी पवित्रता नहीं कहेंगे।

23) इस ईश्वरीय सेवा में बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्म-घात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्म-घात है। पवित्रता जीय-दान है। किसका दु:ख लेकर सुख देना, यही सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य का काम है। ऐसे पुण्य करते-करते पुण्यात्मा बन जायेंगे।

24) दु:ख-अशान्ति की उत्पत्ति अपवित्रता से होती है। जहाँ अपवित्रता नहीं वहाँ दु:ख अशान्ति कहाँ से आई। आप सब पतित-पावन बाप के बच्चे मास्टर पतित-पावन हो, तो जो औरों को पतित से पावन बनाने वाले हैं वह स्वयं तो पावन होंगे ही। ऐसी पावन पवित्र आत्माओं के पास सुख और शान्ति स्वत: ही है। सबसे बड़े ते बड़ी महानता है ही पावन बनना। आज भी इसी

महानता के आगे सभी सिर झुकाते हैं।

25) अपना निजी-स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान समाप्त हो जायेगा। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है, अब इसकी अविद्या होनी चाहिए क्योंकि यह संस्कार व स्वरूप आपका नहीं है बल्कि आपके पूर्व जन्म का था। अभी आप ब्राह्मण हो, ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप है, ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार अनुभव होना, इसको कहा जाता है - न्यारा और प्यारा।

26) जैसे देह और देही दोनों अलग-अलग दो वस्तुएं हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया है; मेरे को मैं समझ लिया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दु:ख और अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो ब्राह्मणपन के नहीं, शूद्रपन के हैं, इनको भी मेरा समझने से माया के वश हो जाते हो और फिर परेशान होते हो।

27) बाप-समान बनना है वा बाप के समीप जाना है तो अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार न करे। सदा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: स्वरूप में हो। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे नहीं आओ।

28) आप सबकी पहली प्रवृत्ति है अपनी देह की प्रवृत्ति, फिर है देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति। तो पहली प्रवृत्ति - देह की हर कर्मेन्द्रिय को पवित्र बनाना है। जब तक देह की प्रवृत्ति को पवित्र नहीं बनाया है तब तक देह के सम्बन्ध की प्रवृत्ति चाहे हद की हो, चाहे बेहद की हो, उसको भी पवित्र नहीं बना सकेंगे। तो पहले अपने आपसे पूछो कि अपने शरीर रूपी घर को अर्थात् संकल्पों को, बुद्धि को, नयनों को और मुख को रुहानी अर्थात् पवित्र बनाया है? ऐसी पवित्र आत्मायें ही महान हैं।

29) पवित्रता संगमयुगी ब्राह्मणों के महान जीवन की महानता है। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रेष्ठ श्रृंगार है। जैसे स्थूल शरीर में विशेष श्वांस चलना आवश्यक है। श्वांस नहीं तो जीवन नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस है पवित्रता। 21 जन्मों की प्रालब्ध का आधार अर्थात् फाउन्डेशन पवित्रता है।

30) जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है, अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलाती है। लेकिन यदि एक विकार भी अंश-मात्र है तो दूसरे साथी भी उसके साथ जरूर होंगे। जैसे पवित्रता का सुख-शान्ति से गहरा सम्बन्ध है, ऐसे अपवित्रता का भी पांच विकारों से गहरा सम्बन्ध है इसलिए कोई भी विकार का अंश-मात्र न रहे तब कहेंगे पवित्रता की पर्सनैलिटी द्वारा सेवा करने वाले।

31) विशेष आत्माओं वा महान आत्माओं को देश की वा विश्व की पर्सनैलिटीज़ कहते हैं। पवित्रता की पर्सनैलिटी अर्थात् हर कर्म में महानता और विशेषता। रूहानी पर्सनैलिटी वाली आत्मायें अपनी इनर्जी, समय, संकल्प वेस्ट नहीं गँवाते, सफल करते हैं। ऐसी पर्सनैलिटी वाले कभी भी छोटी-छोटी बातों में अपने मन-बुद्धि को बिज़ी नहीं रखते हैं।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"अमृतवेले से सदा अपनी ऊंची शान में, स्वमान में रहो तो मन कभी परेशान नहीं करेगा" (29-11-09)

मीठा बाबा, प्यारा बाबा, मेरा बाबा कहने से नशा चढ़ जाता है। मेरा बाबा कितना मीठा बोल है! सारे दिन में मेरा (चाहे शरीर, चाहे सम्बन्ध, चाहे पदार्थ, चाहे कार्य) ही तो याद आता है ना। इसीलिए बाबा ने कहा वो सब मेरा की जगह ''मेरा बाबा'' कहो। फिर देखो बाबा की कमाल, बाबा का वरदान। बाबा किसी को भी जितना चाहे उतना निमित्त बना सकता है।

जीवन में सभी सम्बन्धों में तीन विशेष सम्बन्ध सबको होते हैं। अभी वह तीनों सम्बन्ध एक बाबा से हैं। बाबा ही मेरा बाप, शिक्षक और सतगुरु है। तो विशेष सम्बन्ध बाबा से जब जुट जाता है तो फिर उसकी याद में समा जाते हैं। याद में या ज्ञान में

यह देह, देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थ ही मुख्य रूप से विघ्न डालते हैं। तो तीनों ही सम्बन्ध एक बाबा से होने कारण बाबा ही याद आयेगा और सहज ही बाबा जो चाहता है, उस आज्ञा को हम पालन कर सकेंगे।

परमात्मा हमको यादप्यार देवे, कितने भाग्य की बात है! बाबा की नज़र हमारे ऊपर पड़ गयी तो भगवान ने हमको पसंद कर लिया और अपना बना लिया, तो हम सब अपने भाग्य को देख हर्षित होते रहते हैं। जिस परमात्मा को सभी याद करते हैं, उसने हमको याद करके अपना बना लिया, तो वाह मेरा भाग्य! वाह मेरा बाबा! यह भाग्य अगर याद रहे तो निरंतर बाबा की याद में खोये हुए रहेंगे। तो अपने भाग्य का वर्णन करते रहो। बाबा हमें परमधाम से पढ़ाने आता है। रोज़ 3-4 पेज का पत्र (मुरली) लिखता है, जिसमें नम्बरवार होते भी सभी को मीठे मीठे बच्चे कहकर अपने समान मीठा बना रहा है। ऐसा बाप, ऐसा शिक्षक, ऐसा सतगुरू और कहाँ मिलेगा! वो गुरू कहेगा पहले तो कांध नीचे करो, फिर कोई न कोई आयुष्मान भव, पुत्रवान भव का वरदान देगा लेकिन हमारे बाबा की यह नवीनता है, जो आपको वरदान पोस्ट में भी भेजता है। ऐसा सतगुरू कोई देखा! इसीलिए सतगुरू को भी याद करो, शिक्षक को भी याद करो और बाप को भी याद करो। स्थूल में भी किसी चीज़ से प्यार होगा तो वो भूलेगा नहीं। ऐसे ही बाबा से प्यार है तो वो बाप को कभी भूल ही नहीं सकता। तो ऐसे बाबा से जिगरी दिल का प्यार होना चाहिए। जिसकी दिल साफ और सच्ची होगी उसको बाप ऑटोमेटिकली याद आयेगा क्योंकि बाप भी सच्चा है ना! ऐसा बाबा हम सबको मिला है तो कितनी खुशी की बात है।

भ्रकुटी के तख्त पर आत्मा विराजमान है, फिर है बापदादा का दिलतख्त, फिर भविष्य में मिलेगा राज्य तख्त, ऐसे तीन तख्त का मालिक बाबा ने बनाया है। तो चेक करो सबसे पहला तख्त भ्रकुटी तख्त पर मैं विराजमान हूँ, दूसरा, बापदादा के दिलतख्त पर विराजमान हूँ और भविष्य तो होगा ही ऑटोमेटिकली। तो बाबा का प्यार पहले हमारे दिल में है? यह नशा और निश्चय है कि हमारा बाबा हमको मिल गया? द्वापर से लेके भगवान को याद किया, लेकिन वह ऐसे सहज मिल जायेगा यह पता नहीं था। एक सेकण्ड में हमारा सौदा भगवान से हो गया। कहने की बात को तो बहुत टाइम लगेगा। दिल से हमने कहा मेरा बाबा, बाबा ने कहा मेरे बच्चे, दिल से सौदा हो गया। मेहनत नहीं लगी। भले माया आती है लेकिन माया को भी तो जान गये ना। माया से भी घृणा नहीं करना है क्योंकि हम जानते हैं कि माया हमको बहुत अनुभव कराती है। हम कहते हैं हम सर्वगुण सम्पन्न बन रहे हैं लेकिन वो गुण समय पर काम में आता है! हम कहते हैं कि बाबा सर्वशक्तिवान है, तो हम भी मास्टर सर्वशक्तिवान है। लेकिन हर शक्ति समय पर काम में आती है। अगर समय पर काम में नहीं आयेगी तो फिर विजयी नहीं बन सकेंगे इसलिए मास्टर सर्वशक्तिवान का अर्थ है, समय पर शक्ति काम में आना।

मन मेरा है माना मालिक मैं हूँ! कोई भी चीज़ को हम मेरा कहते हैं, तो मैं उस मेरे का मालिक हूँ। मेरा मन परेशान करता है लेकिन वो मेरा है। मैं अलग हूँ और मेरा अलग है। तो भले मन कुछ भी करता है लेकिन मालिक अगर ठीक है, अच्छी तरह से सम्भालता है, तो उसका कारोबार सहज चलता है। अगर मालिक ही नीचे ऊपर करने वाला होगा तो उसका कारोबार कभी नहीं चलेगा। तो मन का मैं मालिक हूँ, इस नशे में रहने से मन कुछ नहीं करता, हमेशा मन साथ देता है, परेशान नहीं करता है। जब शान से परे होते हैं तो मन परेशान करता है। मेरा शान है मैं मन का भी मालिक हूँ। तो जब भी कोई परेशानी आवे तो यह चेक करो कि मैं अपनी शान में हूँ? मेरा स्वमान क्या है? कोई न कोई स्वमान स्मृति में आने से मन अपने ऑर्डर में रहेगा, कभी मन धोखा नहीं देगा। तो मन को ठीक करने के लिए बाबा कहता है, अमृतवेले से अपनी शान में रहो मैं कौन? विश्व-कल्याणकारी मेरा बाप है, तो मैं भी विश्व-कल्याणकारी हूँ। हर रोज़ अगर अपना कोई न कोई स्वमान याद करो तो सारा दिन उसी नशे में रहेंगे। मैं बाप के नयनों का नूर हूँ, मैं विश्व-परिवर्तक हूँ, मैं तीन तख्त का मालिक हूँ। आज का सारा दिन मैं इस स्वमान में रहूँगा। जहाँ स्वमान (स्व का मान) है, वहाँ देहभान नहीं है। परेशान तब होते हैं जब देहभान में आते हैं। तो स्वमान में रहेंगे तो देहभान भी खत्म हो जायेगा। कभी आपके मन से खुशी गायब नहीं होगी। बाबा ने इतना खुशनसीब बनाया है, जो खुशी मेरे से जा ही नहीं सकती है क्योंकि खुशी हमारा खज़ाना है। खुशी के लिए कहा जाता है खुशी जैसा कोई धन नहीं। खुशी में हेल्थ, वेल्थ और हैपी तीनों ही आते हैं। तो बाबा कहते खुश रहो और खुशी बाँटो। खुशी ऐसी चीज़ है जो बांटने से बढ़ेगी। तो खुशी धन भी है, खुशी खाना है, खुशी खजाना भी है, सब कुछ खुशी है, तो सदा खुश रहें। यह सदा शब्द याद रखना।

तो मन मेरा है तो मेरे में कन्ट्रोलिंग, रूलिंग पॉवर होनी चाहिए। जैसे मन को चलाने चाहूँ वैसे चले क्योंकि बाबा ने बता दिया है, आगे का समय ऐसा आयेगा जो आपको एक सेकण्ड में बिन्दी लगानी पड़ेगी, फुलस्टॉप। आत्मा बिन्दी स्वरूप हूँ, बिन्दी लगानी पड़ेगी। ऐसे नहीं समय ऐसा आये और हमारी प्रैक्टिस नहीं हो, उस समय हम प्रैक्टिस करूँ और समय नाज़ुक हो जाए तो उस समय कुछ अभ्यास नहीं कर सकेंगे। उस समय किया हुआ अभ्यास हमें काम में आयेगा। तो बाबा ने हम सब बच्चों को ऐसा बनाने के लिए कहा है, अपनी चेकिंग आप करो कि जिस समय फुलस्टॉप लगाने चाहूँ वो लगती है? लगाऊं बिन्दी और लग जाए क्वेश्चन मार्क या आश्चर्य की मात्रा, यह नहीं होना चाहिए। इसके लिए बहुत समय का अभ्यास चाहिए। अपनी दिनचर्या के हिसाब से मन का टाइमटेबल बनाके, बार-बार उसे चेक करो और उसी अनुसार चलते रहो क्योंकि मूल बात है मन की। मन में अच्छा भी आता है, मन में बुरा भी आता है। और मन में संकल्प चलते हैं, तो संकल्प मन का भोजन है। जैसे शरीर का भोजन स्थूल है, ऐसे मन का भोजन है संकल्प, मन संकल्प के बिना नहीं रहता है। कोई न कोई अच्छा या बुरा संकल्प चलता जरूर है। तो मन के संकल्पों को कन्ट्रोल करने का अभ्यास बहुतकाल से होना चाहिए, तभी हम विजयी बनके बाबा के वरदानों को पा सकेंगे।

बाबा कहते हैं सब अचानक होना है इसके लिए एवररेडी रहना है, यह बहुतकाल का पुरुषार्थ ही बहुतकाल की प्रालब्ध प्राप्त करायेगा इसलिए बाबा यह तीन बातें बार-बार रिवाइज कराता रहता है। यह बहुत समय का अभ्यास चाहिए। समय आयेगा ठीक हो जाऊंगा नहीं! अभी अभी हमको बहुतकाल का अभ्यास करना है क्योंकि बाबा हर बच्चे के लिए समझते हैं, वर्सा फुल 21 जन्म का लेवें, 2-4 जन्म भी कम नहीं हों। हम सबका लक्ष्य होना चाहिए कि हम पहले जन्म में श्रीकृष्ण के साथ रास करें। लक्ष्य रखने से लक्षण आ जायेंगे। भगवान के बच्चे हैं, भगवान हमारा साथी है तो क्या नहीं हो सकता है। यह निश्चय और नशा सदा रहेगा तो आप जो भी संकल्प मन को देंगे, वो वही करेगा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"ज्ञान का सिर्फ मंथन नहीं करो, उसे यूज करो तो अंधकार चला जायेगा"

(30-09-06)

सवेरे-सवेरे अमृतवेले बाबा जगाता है, जगाना उनका काम है, और हमको क्या करना है? अच्छी तरह से उनके सामने बैठ जाना है। सवेरे सो नहीं सकते, बाबा ने ऐसी आदत डाली है। जैसे माँ-बाप बचपन से बच्चों में जो आदत डालते हैं वो जीवन भर काम आती है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, भले उम्र में बड़े हैं पर बाबा के बच्चे हैं। अपने को छोटा-बड़ा समझना भूल है। छोटा समझेंगे तो अलबेले हो जायेंगे। बड़ा समझेंगे तो अभिमानी हो जायेंगे। तो बाबा का बच्चा समझने से दो फायदे तुरन्त हो जाते हैं - एक अलबेला समाप्त और दूसरा अभिमान समाप्त।

जैसे बाबा शुरू में कहते थे, ऊंची पहाड़ी पर जाने के लिए डबल इन्जन लगती है। तो ऊंची स्थिति पर जाने के लिए तुम्हें भी डबल इन्जन मिली हुई है। निराकारी भी रहो, निर्विकारी भी रहो। आज बाबा ने कहा याद में नहीं रहेंगे तो विकर्माजीत कैसे बनेंगे। अभी है विकर्माजीत बनने का समय। हमारी विकर्मों पर जीत माना कोई विकल्प न आये। पुराने विकर्म तो विनाश हो जायें पर अभी इतनी जीत हो। जिन रोया तिन खोया, पद कम, सारी कमाई खत्म। पहले आँखों से प्रेम के आँसू बहते थे, बाबा ने कहा यह भी कमजोरी है, शो है। मम्मा को देखा कभी प्रेम का भी आँसू नहीं बहाया, प्रेम स्वरूप रही है। इतना गम्भीरता पूर्वक ज्ञान को धारण करने से याद में निरन्तर रही है। ज्ञान गम्भीर बनाता है, गम्भीर में दिखावा नहीं होता है, वह अन्दर ही अन्दर सन्तुष्ट रहेगा, प्रसन्नचित्त रहेगा। उसका अनुभव कहता है बाबा ने इतना दिया है, खुश रहना राज़ी रहना। राज़ी रहने वाला खुश है, खुश रहने वाला राज़ी रहता है। अपनी अवस्था को ऐसा जमाना, यह है समझदार का काम, तब दिखाई पड़ेगा यह सच्चा राजयोगी है। अवस्था जमाने से पहले याद, विकर्माजीत

बनने के लिए याद। कोई विकर्म अब न हो, अभिमान वश या लोभ वश, या मान-शान वश अपमान की फीलिंग आ गयी। तो बाबा दूर चला गया, मैं यहाँ रह गयी। नहीं तो दूर देश वाला बाबा यहाँ बैठा है - समझा रहा है, दिखा रहा है। ऐसी स्थिति बनाने के लिए बहुत भाग्य दे रहा है। संग का, संगठन का, सेवा का भाग्य मिला है। संगठन में एक दो को याद दिलाना बहुत अच्छा लगता है। कुछ न भी बोलें, पर जहाँ भी हैं जो भी सेवा कर रहे हैं, याद दिला रहे हैं।

विश्व को क्या पढ़ाना है, वो पढ़ा रहा है, विश्व की राजाई लेने के लिए पढ़ा रहा है। हम पढ़ने के लिए बैठे हैं, कितनी सुन्दर सीन लगती है। बड़ा रुचि से, दिल से पढ़ रहे हैं। जो दिल से पढ़ता है उनकी दिलाराम से दिल लगी रहती है। ऐसे पढ़ाने वाले से दिल लगाना भूल होती है। लेकिन यहाँ पढ़ाने वाले से दिल लग गयी है, यह भूल नहीं है। दिलवाला मन्दिर यादगार है, क्योंकि तपस्या दिलवाला के साथ हो सकती है। पहले दिल आराम में आई, फिर दिलवाला के साथ तपस्या में बैठने की शक्ति आ गयी। जब दिल खुश नहीं है तो मैं कहाँ और वो कहाँ?

मेरी दिल कभी कठोर होगी, कभी कोमल होगी। जब दिल दिलाराम के पास बैठ गयी है, तो दिल आराम में है। प्यार भरी दुआयें बाबा से पाई हैं। इतना प्यार है कि मेरे बच्चे को सिर में खुजली भी न हो। जरा कांटा भी न लगे, फूलों की तरह पालता है। जिसमें कोई गुण नहीं उसमें बाबा ने सब गुण भर दिये हैं। कैसा हमारा बाबा कल्याणकारी है।

याद हमको अभिमान से मुक्त करती जाये, बाबा से कनेक्शन ऐसा हो जो मन पर कोई इफेक्ट न आये। दिल और मन आपस में इकट्ठे हैं। मन को ऐसी खुराक मिल गयी है जो कभी भूखा होकर चिल्लाता नहीं है। अगर राँग सोच लिया तो फूड प्वाइज़न हो गया। तो बाबा कहते बच्चे कर्म में आओ, सम्बन्ध में आओ परन्तु योगयुक्त रहो। तो एवरहेल्दी, वेल्दी, हैप्पी रहेंगे। सबकी दुआयें मिलती रहेंगी। दुआ मांगेंगे नहीं, अपने आप मिलेंगी। बाबा ऐसे बच्चे को बहुत प्यार से पालता है।

ज्ञान को सिर्फ मंथन नहीं करो, यूज़ करो। एक है ज्ञान सुनना, सुनाना, मंथन करना वो बड़ी बात नहीं है। यूज़ करना है। जीवन का आधार है ज्ञान, जिससे हम निराधार हो गये हैं। हम प्रकृति के अधीन नहीं हैं। ज्ञान से अन्धकार भी चला गया है, किचड़ा भी चला गया है। जब तक अन्दर का सारा किचड़ा भस्म नहीं हुआ है तो कोई न कोई किचड़ा उड़कर आ जायेगा। इसमें किसका दोष है? भगवान का या माया का? बाबा कहता है मैं तो माया को हुक्म करता हूँ कि इसको अच्छी तरह से पछाड़ना, देखना कहाँ तक पक्के हैं! सारा पुरुषार्थ है अपने ऊपर। बाबा सिखाता है, समझाता है, ऐसा वातावरण भी देता है। क्या खाओ, कैसे बैठो, सब सिखाता है सिर्फ शिक्षा अनुसार चलना हमारा काम है। हर समय अपने फेस को देखो, किसका बच्चा हूँ।

याद इतनी परिपक्व होती जाये, जो कोई भी पुरानी बात याद न आये। याद आई माना विघ्न आया। विघ्न आया तो जायेगा नहीं, टाइम लगायेगा। एक होता है ग्रहचारी, एक होता है विघ्न। चलते-चलते ग्रहचारी बैठ जाती है, कभी हल्की, कभी कड़ी ग्रहचारी बैठती है। चाहेंगे नहीं परन्तु उनसे राँग ही होता रहेगा। वैसे भी जब ग्रहचारी बैठती है तो ब्राह्मण के पास जाते हैं। कोई अभिमानी होगा तो उसे महसूस ही नहीं होगा कि यह ग्रहचारी है, वो दूसरों का दोष निकालेगा। जिस घड़ी से दूसरों का दोष निकाला, उसी घड़ी से ग्रहचारी बैठ जाती है। फिर जब उतरे।

भक्ति है विस्तार, ज्ञान है बीज। कोई बात के विस्तार में न जाना, बीजरूप बाबा को याद करना। बीज है सत्य और शान्त। बीज बहुत पावरफुल है। मैं बीज की सन्तान हूँ, तो विस्तार दिखाई नहीं पड़ता है। उसके आधार पर वृद्धि हो रही है। तो बाबा कहते हैं किसी बात के विस्तार में नहीं जाओ। अपने चिन्तन को शुद्ध बनाके रखो, तो यह सम्भाल है - ग्रहचारी न बैठे। दूसरा निर्विघ्न स्थिति रहे, भले विघ्न सामने आये, हम केयरलेस न रहें। नहीं तो विघ्न चक्कर में ले आयेंगे। योगबल से विघ्न अन्दर ही अन्दर खत्म हो जायें, उसके लिए चाहिए तपस्या। दिलाराम से दिल लगी हुई हो। जो बाबा कराये वही करना है। तपस्या ऐसी हो जो औरों के भी कीटाणु चले जायें। किसी का दोष नहीं है। बाबा कहता है बुद्धि इतनी विशाल हो, हदों से पार हो जो हमारे लिए दिन रात न हो। जैसे सूर्य 24 घण्टा ही अपनी सेवा करता रहता है। बाबा ने कहा है हर बात में मास्टर बनो। बचपन, फिर जवानी ऐसी हो जैसे महावीर। महावीर बनके सारी बातें पार कर ली। ऐसा मैं महावीर हूँ? बच्चे बाप को आगे रखें, बाप बच्चे को आगे रखें - यह प्रभु लीला चल रही है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"साइलेन्स की पावर द्वारा विश्व कल्याण की सेवा करो" (2000)

1) अभी हम सब इस देह से, इस पुरानी दुनिया से, इन 5 तत्वों से भी पार हो साइलेन्स में बैठे हैं। साइलेन्स एक बड़ी पावर है, इसमें सर्व शक्तियाँ समाई हुई हैं। जैसे साइन्स वालों ने साइन्स पावर से शक्तिशाली वस्तुयें बनाई हैं - एटम बाम्ब आदि। तो हम आलमाइटी अथॉरिटी अर्थात् सर्व शक्तियों से सम्पन्न परमधाम निवासी हैं। हम आत्मायें पार्टधारी हैं, पार्ट बजाकर अपने घर चले जाने की तैयारी कर रहे हैं। वह आया है पण्डा बनकर हमको साथ ले जाने के लिए। सर्व सम्बन्धों से मुक्त कराकर अपने साथ कनेक्शन भी जुड़ाया है क्योंकि अब घर वापिस जाना है। तो अब यहाँ बैठे भी उस साइलेन्स का अनुभव करना है। जब वहाँ चले जायेंगे तब उस साइलेन्स का अनुभव वर्णन नहीं कर सकेंगे। तो अब शान्ति का अनुभव भी बाप इस ही जीवन में कराते हैं।

2) जितना-जितना हम मन-बुद्धि को 5 तत्वों से पार ले जायेंगे तो जो स्वीट साइलेन्स होम है, वहाँ जाकर निवास करेंगे। और लाइट-माइट का अनुभव करेंगे। जेसे सितारे आकाश तत्व के अन्दर अपने-अपने स्थान पर चमकते रहते हैं, वैसे हम भी ब्रह्म तत्व में जाकर बाप के साथ उस साइलेन्स की शक्ति का अनुभव कर सकते हैं। बाप को इन आंखों से नहीं देख सकते हैं लेकिन उसके कर्तव्य द्वारा, उनके गुणों द्वारा, शक्तियों द्वारा उसका अनुभव होता है। तो जितना हम उसमें स्थिति रहेंगे उतना ही हम उस साइलेन्स पावर का अनुभव करेंगे। उस याद से हमारे अनेक जन्म के विकर्म विनाश होते हैं और मन के संकल्प-विकल्प भी मर्ज हो जाते हैं। मास्टर आलमाइटी की स्टेज का अनुभव होता है। जितना-जितना अभ्यास करते जायेंगे उतना बेहद विश्व की सेवा कर सकेंगे। जो वाचा द्वारा हम सर्विस नहीं कर पाते, वह हम समर्थ संकल्प द्वारा दूर वाली आत्माओं की सेवा कर सकते हैं। बाबा कहते हैं आपके बहुत भक्त हैं, जो आपका आह्वान कर रहे हैं, प्यासे हैं। तो वे हमारी झलक को कब देख सकते हैं? जब हम एकाग्र अवस्था में रहेंगे। हमारा संकल्प उतना चले जो समर्थ हो, व्यर्थ न आवे। वाचा भी उतनी ही चले जो समर्थ हो, सेवा अर्थ हो - व्यर्थ न जावे। ऐसा गुप्त पुरुषार्थ चाहिए। बुद्धियोग की लाइन क्लीयर हो, बुद्धि पवित्र हो तो बाप की प्रेरणाओं को, बाप की पावर को कैच कर सकते हैं।

3) जब हम देह से निकल बाप को याद करते हैं तो बुद्धियोग जुट जाता है तब ही बाप से हम सर्वशक्तियों का अनुभव कर सकते हैं। जब हम इस 5 तत्वों से पार हो जाते हैं। पृथ्वी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, जब ही हम रीयल शान्ति का अनुभव कर सकते हैं।

4) हम दुनिया की निगाहों से दूर, आवाज से परे परम शान्ति का अनुभव करते हैं, तो आवाज में आना पसन्द नहीं आता। हम सिर्फ पार्ट बजाने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार लेकर आते हैं – ऐसे अनुभव होगा।

5) इस साइलेन्स की शक्ति से क्विक सर्विस कर सकते हैं। साइलेन्स पावर दूर-दूर में जाकर काम करेगी। बाबा कहते थे बच्चे तुम विश्व कल्याणी हो। तो हमारा विचार चलता कि हम सारे विश्व की सेवा कैसे करेंगे। जब साइलेन्स पावर कई जन्मों के विकर्मों को भस्म कर सकती है तो विश्व की आत्माओं की सेवा क्यों नहीं कर सकती। हम सूक्ष्म में किसी भी आत्मा को बुला सकते हैं, उनसे रूह-रिहान कर सकते हैं, उसकी लाइट-माइट का दान दे सकते हैं। साइलेन्स पावर से ऐसा औरों को अनुभव होगा। सेन्टर पर पांव रखेंगे तो जैसे उन्हों को सन्नाटा महसूस होगा। महसूस होगा तो कितनी शान्ति है।

6) यह बहुत मीठी अवस्था है। इससे बहुत शान्ति, अतीन्द्रिय सुख की महसूसता होती है। साइलेन्स पावर अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति। हमारी सिर्फ साइलेन्स नहीं हैं लेकिन हमारी ओरिज्नल स्टेज जो बाप समान स्टेज है, उसमें स्थित होना है। ओरिज्नल स्टेज है मास्टर सर्वशक्तिमान की स्थिति, जिसमें कोई भी संकल्प की उत्पत्ति नहीं होती है, जिसको दूसरे शब्दों में बीजरूप की स्थिति कहेंगे। हम भी बिन्दु हैं बाबा भी बिन्दु है, हम बाबा के साथ कनेक्शन जोड़े, सर्व शक्तियों के स्टॉक को जमा करें। जैसे बाप विश्व कल्याणी है वैसे हम बच्चे हैं, उसको लाइट माइट अर्थात् शान्ति का पुन्ज कहें। वह माइट हाउस अर्थात् सर्व शक्तियों से भरपूर होगा। उसकी स्थिति द्वारा सेवा होती रहेगी। दृष्टि द्वारा निराकारी स्थिति का साक्षात्कार होता रहेगा। ओम् शान्ति।